खण्ड-12, अंक-1, वर्ष-2024, मु0प्र0 37-41
D.O.I.: https://doi.org/10.22445/avsp.v12i1.7
SJIF (2024) : 8.287

शोध पत्र

Importance of parental involvement for child in different family structures

Garima Yadav
Research Scholar, Department of Teacher Education,
Nehru Gram Bharati (Deemed University)
Kotwa, jamunipur, dubawal, Prayagraj-221 505, U.P., India
garimay531@gmail.com

Received: 28-10-2024, Accepted: 21-12-2024

Abstract- The aim of this research paper is to identify the importance of parental involvement in the development and health of children, irrespective of the type of family, for example nuclear, single parent, joint or extended special family. Also, parental involvement has been seen in many contexts, like, emotional, social and developmental. This study shows how family structure affects the nature and extent of parental involvement. Most people believe that parental involvement is important in any family structure, but stress levels, parenting, socio-economic status, culture vary. For example, in a family headed by a single parent, the parent has to do most of the work and also care for the children, thus his/her involvement is often limited. This article shows that promoting healthy parental involvement can reduce the negative effects and risk factors of a negative family structure, leading to stronger community systems and better educational outcomes.

Key words- Parental involvement, family structure, child development, nuclear family, single-parent family, social development, parenting strategies.

विभिन्न पारिवारिक संरचनाओं में बच्चों के लिए अभिभावक संलग्नता का महत्व

गरिमा यादव
शोध–छात्रा, शिक्षक शिक्षा विभाग, नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय)
कोटवा, जमुनीपुर, दुबावल, प्रयागराज–221 505, उ0प्र0, भारत
garimay531@gmail.com

सार– इस शोध प्रबंध का उद्देश्य बच्चों के विकास और स्वास्थ्य में अभिभावक संलग्नता के महत्व को पहचानना है, चाहे परिवार के प्रकार कुछ भी हों, एकल, एकल अभिभावक, संयुक्त या (विस्तारित परिवार)। साथ ही, अभिभावक संलग्नता को कई पहलुओं में भी देखा गया है, जैसे भावनात्मक, शैक्षणिक, सामाजिक और विकासात्मक। यह अध्ययन दर्शाता है कि पारिवारिक संरचना अभिभावक संलग्नता की प्रकृति और सीमा को कैसे प्रभावित करती है। अधिकांश लोगों को लगता है कि किसी भी पारिवारिक संरचना में, अभिभावक संलग्नता महत्वपूर्ण है, लेकिन तनाव का स्तर, पालन–पोषण, सामाजिक आर्थिक स्थिति, संस्कृति अलग–अलग होती है। उदाहरण के लिए, एकल अभिभावक के नेतृत्व वाले परिवार में अभिभावक को ज्यादा काम करना पड़ता है और बच्चों की देखभाल भी करनी पड़ती है, इस प्रकार प्रायः उसकी भागीदारी सीमित होती है। यह लेख इंगित करता है कि माता–पिता की स्वस्थ भागीदारी को बढ़ावा देने से नकारात्मक पारिवारिक स्थितियों के हानिकारक प्रभावों और जोखिम कारकों को कम किया जा सकता है, जिससे मजबूत प्रतिस्पर्धा तंत्र और बेहतर शैक्षणिक परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

बीज शब्द– अभिभावक संलग्नता, पारिवारिक संरचना, बाल विकास, एकल परिवार, एकल–अभिभावक परिवार, सामाजिक विकास, पालन–पोषण रणनीतियाँ।

1. **परिचय**– अभिभावक संलग्नता छात्रों की प्रेरणा को बढ़ाती है और उन्हें उच्च लक्ष्य निर्धारित करने और उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करती है।[1] सभी प्रकार के परिवारों में, चाहे वे संयुक्त, एकल, विस्तारित, एकल अभिभावक, संयुक्त या मातृसत्तात्मक हों, बच्चों के भावनात्मक, सामाजिक और संज्ञानात्मक विकास के लिए माता–पिता या अभिभावक की भागीदारी आवश्यक है। सांस्कृतिक

निर्माण की प्रक्रिया में समय के साथ, आत्मसात करने की प्रक्रिया में आने वाले प्रतिबंधों के कारण, एक संस्कृति के भीतर स्तरीकरण की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। समाजशास्त्रियों द्वारा बहुसंस्कृतिवाद पर चर्चा की गई है, जिसमें तर्क दिया गया है कि एक जातीय समूह, दूसरों के बीच सबसे अधिक सांस्कृतिक महत्व रखता है। दरअसल, सामाजिक पूंजी, क्षेत्र और प्रतीकात्मक हिंसा के बारे में लोगों की धारणाएँ, समाजों के भीतर और उनके बीच शैक्षिक असमानताओं की उत्पत्ति और निरंतरता के पीछे की प्रक्रियाओं को स्पष्ट करती हैं। विभिन्न आबादी में स्वास्थ्य चाहने वाले व्यवहार में अंतर को समझाने में सांस्कृतिक और जातीय कारक बहुत महत्वपूर्ण हैं।

2. **अध्ययन की आवश्यकता और महत्व**– हर बच्चे के जीवन में, माता–पिता की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि यह सीधे तौर पर प्रभावित करती है कि वे भावनात्मक, सामाजिक और शैक्षणिक रूप से कितने अच्छे हैं। हर पारिवारिक संरचना में, माता–पिता अलग–अलग तरीके से सक्रिय भूमिका निभाते हैं। अध्ययनों से पता चलता है कि जिस बच्चे के माता–पिता जीवित होते हैं और अपने जीवन में सक्रिय होते हैं, वह स्कूल में अच्छा प्रदर्शन करता है, उसका व्यवहार अच्छा होता है और उसका आत्म–सम्मान उच्च होता है। उदाहरण के लिए, एकल परिवार जो पारंपरिक मॉडल का पालन करते हैं, उनमें माता–पिता की आसान भागीदारी होती है, लेकिन एकल–अभिभावक परिवारों के मामले में, समय और संसाधनों से संबंधित बाधाएँ भागीदारी को सीमित करती हैं। फिर भी, विशेष रूप से एकल माताएँ एक ऐसा बंधन बनाने में सक्षम होती हैं जो कुछ अन्य क्षेत्रों में नहीं हो सकता है। सह–परिभाषित परिवारों में कुछ चुनौतियाँ भी हैं क्योंकि उचित सह–पालन बच्चों के नेटवर्क को सुविधाजनक बना सकता है। ऐसी स्थितियों में, नए साथी को संभालने के संबंध में अभिभावक संलग्नता आवश्यक हो जाती है। इसके विपरीत, ऊर्ध्वाधर नेटवर्क विस्तारित परिवार हैं जो बच्चों को अतिरिक्त सहायता और अनुभव प्रदान करते हैं और साथ ही उनकी ताकत का निर्माण करते हैं। अभिभावक संलग्नता भी पारिवारिक पृष्ठभूमि के अनुसार भिन्न होती है। विभिन्न जातीयताओं के माता–पिता एक ही तरह से भाग ले सकते हैं या नहीं भी ले सकते हैं, लेकिन भागीदारी की आवश्यकता पर कभी सवाल नहीं उठाया जाना चाहिए। बच्चों में स्वस्थ वृद्धि और विकास माता–पिता को उनकी सीखने की प्रक्रिया और भावनात्मक देखभाल में शामिल करने पर निर्भर करता है, चाहे परिवार की व्यवस्था किसी भी तरह की क्यों न हो। उपरोक्त के अनुरूप, पारिवारिक संरचना आधारित नीतियों और कार्यक्रमों को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण हो जाता है जो अभिभावक संलग्नता को प्रोत्साहित करते हैं।

3. **संबंधित साहित्य की समीक्षा**– ओरंगा, माटेर और न्याकुंडी[2] का वर्णन इस प्रकार है– माता–पिता की स्वयंसेवा बच्चों को उनकी कई गहरी प्रतिभाओं, कौशल और व्यवसायों के बारे में जागरूक होने में सहायता कर सकती है। माता–पिता स्वयंसेवक संगठित स्कूल प्रदर्शनियों, मौखिक इतिहास कहानी सुनाने के कार्यक्रमों और सांस्कृतिक मेलों के माध्यम से बच्चों को विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं को सिखाने में मदद कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, शिक्षक कक्षाओं में विशेष परियोजनाओं, कक्षा क्षेत्र यात्राओं या अन्य प्रासंगिक भूमिकाओं के लिए माता–पिता की स्वैच्छिक मदद भी मांग सकते हैं। सिंह, रीता (2019) ने अपने शोध 'छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावक संलग्नता और परीक्षा की चिंता के प्रभाव का अध्ययन' में, ने व्यक्त किया है कि, छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा बोर्ड और केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अंतर्गत स्कूलों में कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले छात्रों की परीक्षा की चिंता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध है।[3] ड्यूरिसिक और बनिजेवैक अपने विचार का वर्णन इस प्रकार करते हैं–अभिभावक संलग्नता स्कूलों को माता–पिता को शैक्षिक प्रक्रिया में लाकर वर्तमान स्कूल कार्यक्रम को समृद्ध करने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती है। माता–पिता की बढ़ी हुई भागीदारी से छात्रों की सफलता में वृद्धि, माता–पिता और शिक्षक की संतुष्टि में वृद्धि और स्कूल के माहौल में सुधार हुआ है। प्रभावी अभिभावक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए, स्कूलों में साझेदारी कार्यक्रम हो सकते हैं स्कूल कई क्षेत्रों में भागीदारी को प्रोत्साहित कर सकते हैं, जिसमें पालन–पोषण, घर पर सीखना, संचार, स्वयंसेवा, निर्णय लेना और सामुदायिक सहयोग शामिल हैं।[4] शर्मा, ने अपने शोध 'बाल्यकाल के अंतिम वर्षों में लड़के और लड़कियों के सामाजिक भावनात्मक विकास पर अभिभावक संलग्नता के प्रभाव का अध्ययन' में पाया कि, औसत अभिभावक संलग्नता वाली सरकारी और निजी स्कूलों की लड़कियों ने समुदाय, समूह–समर्पण, मित्रता, नेतृत्व, सहयोग, सहानुभूति, सहिष्णुता, प्रतिस्पर्धा और प्रतिद्वंद्विता आदि का समान विकास दिखाया हैं।[5] अभिभावक संलग्नता में बच्चे के भीतर सुधार समस्या व्यवहार में गिरावट और सामाजिक कौशल में सुधार की भविष्यवाणी करता है, लेकिन उपलब्धि में बदलाव की भविष्यवाणी नहीं करता है। बच्चों के बीच के विश्लेषण ने प्रदर्शित किया कि अत्यधिक शामिल माता–पिता वाले बच्चों में सामाजिक कामकाज में सुधार हुआ और व्यवहार संबंधी समस्याएँ कम हुईं। अभिभावक संलग्नता की शिक्षक और माता–पिता–रिपोर्ट के लिए निष्कर्षों के समान पैटर्न सामने आए।[6–10]

4. **अध्ययन के उद्देश्य**– संयुक्त परिवारों और एकल परिवारों में बच्चे के लिए अभिभावक संलग्नता के महत्व का अध्ययन करना।

- एकल अभिभावक परिवारों और विस्तारित परिवारों में बच्चे के लिए अभिभावक संलग्नता के महत्व का अध्ययन करना।
- संयुक्त और मातृसत्तात्मक परिवारों में बच्चे के लिए अभिभावक संलग्नता के महत्व का अध्ययन करना।

5. **शोध पद्धति**– इस अध्ययन में शोध पद्धति के रूप में विषय–वस्तु विश्लेषण का उपयोग किया गया है। शोध की विषय–वस्तु विश्लेषण पद्धति घटनाओं, व्यक्तियों और समाजों का अध्ययन और व्याख्या करने के लिए एक व्यवस्थित दृष्टिकोण है। इस अध्ययन ने व्यापक सामाजिक स्थितियों को समझने के लिए घटनाओं और स्रोतों का विश्लेषण एक व्यापक तर्क बनाने के लिए विभिन्न स्रोतों से प्राप्त निष्कर्षों को संयोजित किया गया है।

6. **विभिन्न पारिवारिक संरचनाओं में बच्चे के लिए अभिभावक संलग्नता**– माता–पिता अपने बच्चों की शिक्षा में हर स्तर में, भाग लेते हैं, जो शैक्षणिक उपलब्धियों और नैतिक मूल्यों की ओर उन्मुख होते हैं। हालाँकि, ऐसी सामाजिक अपेक्षाएँ और सांस्कृतिक प्रथाएँ अभिभावक संलग्नता के स्तर को भी स्पष्ट करती हैं, जो प्रायः सही और उचित आचरण और दायित्वों को निर्धारित करती हैं। स्थान और आर्थिक पहलू स्कूल की गतिविधियों में अभिभावक संलग्नता में एक भूमिका निभाते हैं। सामान्य तौर पर, भले ही अभिभावक संलग्नता परिवार संघ संरचना के अनुसार भिन्न हो सकती है, लेकिन बच्चे के पालन–पोषण और देखभाल का सामान्य उद्देश्य भारत के सभी भागों में स्थिर रहेगा। विभिन्न पारिवारिक संरचनाओं में अभिभावक संलग्नता और बच्चों पर इसके महत्व पर यहाँ चर्चा की गई है–

7. **संयुक्त परिवार में अभिभावक संलग्नता**– भारत में, विशेष रूप से संयुक्त परिवारों में अभिभावक संलग्नता बच्चे के स्वस्थ विकास की नींव रखती है। परिवार इकाई, जिसमें माता–पिता और बच्चे व अतिरिक्त बड़े वृद्धजन परिवार के सदस्य सम्मिलित होते हैं, एक अनुकूल वातावरण बनाता है जो भावनात्मक समर्थन, सामाजिक कौशल और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण को बढ़ावा देता है। संयुक्त परिवार प्रणाली में माता–पिता एकल परिवार की तरह व्यक्तिगत रूप से ज़िम्मेदारियाँ नहीं संभालते हैं, इसलिए कम तनाव होता है और बेहतर वातावरण को बढ़ावा मिलता है। दादा–दादी और परिवार के अन्य सदस्य बच्चे के पालन–पोषण में ज्ञान और शिक्षा प्रदान करके योगदान देते हैं जो बच्चे को विशिष्ट संस्कृति के साथ उचित व्यवहार करने में मदद करते हैं। इस तरह की बातचीत बच्चों को भावनात्मक बुद्धिमत्ता और बदलाव से निपटने की क्षमता प्रदान करती है, जो किसी के जीवन में महत्वपूर्ण पहलू हैं। इसके अलावा, इस प्रकार की पारिवारिक प्रणाली बीमारी, तलाक या किसी अन्य गिरावट जैसे पारिवारिक परिवर्तनों के बीच बच्चों के सहायक नेटवर्क को बनाए रखने में सक्षम है। निष्कर्ष में, उन परिवारों में पिता की भूमिका को समझना महत्वपूर्ण है, जिनमें परिवार के सभी सदस्य पालन–पोषण में शामिल होते हैं, क्योंकि इससे बच्चे के भावनात्मक, सामाजिक और मानसिक विकास के लिए एक समग्र और अनुकूल वातावरण बनता है, जो समय के साथ पारिवारिक संबंधों और सांस्कृतिक मान्यताओं को मजबूत करने में मदद करता है। अध्ययन से पता चलता है कि, उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले परिवार सहायक और बुनियादी भागीदारी को अपनाते हैं। कम सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले परिवार पर्यवेक्षी और असंलग्न भागीदारी को अपनाते हैं। समस्या व्यवहार को कम करने के लिए सहायक प्रकार सबसे अनुकूल तरीका है।

8. **एकल–अभिभावक परिवार में अभिभावक संलग्नता**– कई अध्ययनों से पता चला है कि अभिभावक संलग्नता का छात्र की शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अभिभावक संलग्नता के पहलू जो कम स्तर की भागीदारी को दर्शाते हैं जैसे कि एकल–अभिभावक परिवारों से माता–पिता की महत्वपूर्ण संख्या यह दर्शाती है कि यदि उन्हें संभावित उपस्थिति दिनों का विकल्प दिया जाए तो वे स्कूल में अभिभावक दिवस में भाग लेंगे। भारत में, विशेष रूप से एकल अभिभावक वाले परिवारों में, बच्चे के जीवन में माता–पिता या अभिभावक की उपस्थिति बच्चे के विकास और भावनात्मक स्थिरता में प्राथमिक होती है। एकल माता–पिता को प्रायः अनोखी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जैसे काम और पारिवारिक दायित्वों को संभालना और भावनात्मक आराम प्रदान करना। उनकी सक्रिय भागीदारी बच्चों में सुरक्षा और संरक्षा की भावना विकसित करने में मदद करती है। भावनात्मक भागीदारी बच्चे को अधिक आत्मविश्वासी बनाती है और आत्म–अनुशासन और सम्मान विकसित करने में मदद करती है, जिसका श्रेय एकल माता–पिता के अविभाजित प्रेम को जाता है। इस तरह का जुड़ाव आत्म–योग्यता और जुड़ाव की भावना को बढ़ा सकता है, जिससे दूसरे माता–पिता की अनुपस्थिति के कारण उत्पन्न होने वाले अलगाव जैसे गुण बहुत कम हो जाते हैं। ऐसे उदाहरण हैं जहाँ बच्चे एकल माता–पिता को आदर्श मानते हैं क्योंकि उन्हें बच्चों में आत्मनिर्भरता, परिपक्वता और ज़िम्मेदारियाँ लेने जैसे मूल्यों को भरने वाले गुरु के रूप में देखा जा सकता है। वे परिवार में स्वस्थ संबंधों को बढ़ावा देने और बच्चों को बोलने और अपने विचार और भावनाएँ साझा करने के लिए प्रोत्साहित करने की अधिक संभावना रखते हैं। अध्ययन के संबंध में, एकल माता–पिता जो बच्चों की शिक्षा में सक्रिय रूप से सम्मिलित होते हैं, वे स्कूल के कार्यों में सहायक होकर और उनकी परियोजनाओं में सहयोग करके बच्चों के शैक्षणिक प्रदर्शन को बढ़ावा देने में मदद करते हैं। इस तरह के समर्थन के रूप में विस्तारित परिवार के सदस्य या कुछ अन्य सामाजिक सहायता नेटवर्क भी हो सकते हैं जो इसे संभव बनाते हैं और सक्रिय भागीदारी को और अधिक प्रोत्साहित करते हैं।

9. **एकल परिवार में अभिभावक संलग्नता**– भारतीय एकल परिवारों में, बच्चे के समग्र विकास के लिए अभिभावक संलग्नता बहुत

महत्वपूर्ण है। चूँकि घर में केवल माता–पिता और बच्चे हैं, इसलिए जुड़ाव का यह पहलू अब बहुत महत्वपूर्ण है। यह भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करता है और माता–पिता के बच्चे के प्रति लगाव को मजबूत करता है जो बच्चे के आत्म–मूल्य और स्वयं पर विश्वास में योगदान देता है। स्कूल की गतिविधियों में माता–पिता की मासिक उपस्थिति और अवकाश गतिविधियों में भागीदारी बच्चे के विकास को प्रोत्साहित करती है और शैक्षणिक प्रदर्शन को बढ़ाती है। यह देखना आसान है कि माता–पिता बच्चों के साथ जुड़ते हैं, चाहे स्कूल के किसी समारोह में जाकर या होमवर्क में मदद करके, एक सीखने का माहौल बनाते हैं जो पूछताछ के लिए उत्साह को बढ़ावा देता है। साथ ही, भावनात्मक क्षेत्र में बच्चों का आंतरिक संतुलन भी बढ़ता है और वे बिना किसी रोक–टोक के अपने कारणों और भावनाओं को व्यक्त करने में सक्षम होते हैं। इस प्रकार की भागीदारी बच्चों को अच्छे नैतिक मूल्यों को विकसित करने में सहायता करने के साथ–साथ उन्हें भविष्य के लिए महत्वपूर्ण अन्य जीवन कौशल से युक्त करने में एक कदम आगे ले जाती है। संक्षेप में, एकल परिवारों में अभिभावक संलग्नता आधुनिक प्रतिस्पर्धी समाज में प्रभावी कार्यशील वयस्कों को तैयार करने के लिए आवश्यक भावनात्मक और शैक्षिक आधार प्रदान करती है।

10. **विस्तारित परिवार में अभिभावक संलग्नता**– विस्तारित परिवार एक ऐसा परिवार है जो माता–पिता और उनके बच्चों के एकल परिवार से आगे बढ़कर चाची–चाचा, दादा–दादी, चचेरे भाई–बहन या अन्य रिश्तेदारों को शामिल करता है, जो सभी पास–पास या एक ही घर में रहते हैं। दादा–दादी और चाची के पास ऐसे अनुभव और तरीके हैं जो बच्चों के पालन–पोषण में सहायक होते हैं। यह संचार उन्हें पालन–पोषण से जुड़े दबावों से बचने की अनुमति देता है क्योंकि माता–पिता उन्हें दिए गए कार्यों को संतुलित कर सकते हैं और विशिष्ट आवश्यकताओं पर ध्यान दे सकते हैं। संकट के समय में, विस्तारित परिवार इकाई विश्राम और दिशा के स्रोत के रूप में सामने आती है। अंत में यह कहना ठीक होगा कि, परिवार के सदस्यों की भागीदारी बच्चे के पालन–पोषण को बढ़ाती है क्योंकि बच्चे का भावनात्मक और सामाजिक विकास समग्र होता है।

11. **मिश्रित परिवार में अभिभावक संलग्नता**– भारत में, विशेष रूप से मिश्रित परिवारों के मामले में उमके माता–पिता बच्चे के भावनात्मक और सामाजिक विकास में बड़ी भूमिका निभाते हैं। इन परिवारों में सुरक्षा की भावना पैदा करने के लिए अभिभावक संलग्नता और जुड़ाव बहुत महत्वपूर्ण है। माता–पिता और सौतेले माता–पिता के बीच प्रभावी समन्वय और बातचीत एक अलग व्यवस्था बनाती है, इसलिए कई बार अनिश्चितताओं और ईर्ष्या से राहत मिलती है। इसके अलावा, एक निश्चित अवधि के बाद मुद्दों को संभालना और अनुभवों को साझा करना भावनात्मक बुद्धिमत्ता को विकसित करने में मदद करता है। इसके अलावा, अलग–अलग परिवार अलग–अलग छवियों और आकृतियों का योगदान करते हैं, जो पारिवारिक संबंधों को बेहतर ढंग से समझने में भी मदद करते हैं। अंत में, यह कहना ठीक होगा कि, मिश्रित परिवारों में ये योगदान सभी बच्चों को जटिलता से निपटने में मदद करते हैं जो बदले में उनके स्वस्थ विकास की सुविधा प्रदान करता है।

12. **मातृसत्तात्मक परिवारों में अभिभावक संलग्नता**– मातृसत्तात्मक परिवार एक पारिवारिक संरचना को संदर्भित करता है जिसमें महिला, परिवार की मुखिया होती है। फिर माँ अपनी शक्ति या स्वामित्व को परिवार की बेटियों को सौंप देती है ताकि महिला–प्रधान परिवार की संरचना को फिर से बनाया जा सके। बच्चे के भावनात्मक और सामाजिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि भारतीय मातृसत्तात्मक व्यवस्था में माता–पिता दोनों सक्रिय रूप से भाग लें। यह बात समझ में आती है क्योंकि कई माताएँ बच्चों को जन्म देती हैं, उनका पालन–पोषण करती हैं और बच्चों का समाजीकरण करती हैं, जो परिवार की वंशावली और संपत्तियों से जुड़ी होती हैं। बड़े होने के दौरान या यहाँ तक कि विकास के शुरुआती चरणों में माताओं द्वारा अपने बच्चों के प्रति प्यार की गैर–मौखिक अभिव्यक्ति माँ और बच्चे के बीच के बंधन को बढ़ाने में बहुत मदद करती है, जिससे वह सुरक्षित और सशक्त अनुभव करता है। ये मज़बूत जीवन कौशल और एक व्यक्ति को कैसे कठोर बनना है, यह महिलाओं और मौजूद अनुकरणीय महिलाओं के प्रति सद्भावना से आता है, क्योंकि बच्चे भी उनसे ही सीखते हैं। परिवार की संरचना में दादी और अन्य बुजुर्ग महिलाओं की मौजूदगी संस्कृतिकरण और समाज के मूल्यों के रखरखाव में एक और प्रमुख योगदानकर्ता है। चूँकि विकास के लिए आवश्यक हर कारक की पूर्ति की जाती है। मातृसत्तात्मक परिवारों में अभिभावक संलग्नता बच्चों के सकारात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिससे वे तेज़ी से बदलते समाज में अच्छी तरह से समायोजित हो सकें।

13. **निष्कर्ष और सुझाव**– माता–पिता और स्कूलों के बीच भागीदारी के महत्व को देखते हुए, यह सुझाव दिया जाता है कि यदि सफलता प्राप्त करनी है, तो स्कूलों के साथ भागीदारी में माता–पिता बच्चों की शिक्षा में अपनी ज़िम्मेदारियाँ साझा करें। अध्ययनों से पता चला है कि आधिकारिक माँगों की विशेषता वाली पेरेंटिंग शैली अभिभावक संलग्नता तथा रणनीतियों के उपयोग को बढ़ावा देती है। यह स्पष्ट है कि सबसे पसंदीदा हल किए गए माता–पिता की अपेक्षाएँ असंतोष परस्पर विरोधी शैलियों से निपटने के लिए संतुलित हैं। संगठनात्मक कारक

और परिवार के भीतर सांस्कृतिक भिन्नता के अंतःक्रियात्मक के प्रभाव और माता–पिता हस्तक्षेपों के मुख्य चर जो 'अभिभावक संलग्नता रणनीतियों के उपयोग' पर नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं, उनमे से एक वैवाहिक सामंजस्य भी है। यह मानना अनुचित होगा कि जो युवा खेल में लगे हुए हैं वे बुनियादी कौशल नहीं सीखते हैं। और ये कौशल अन्य के अलावा खेल और व्यायाम प्रतियोगिता और प्रदर्शन और विकास में मौलिक हैं। माता–पिता की बेहतर भागीदारी, हिंसा या नशीली दवाओं का सेवन करने वाले किशोरों के पुनर्वास में भी मदद कर सकती है और पारिवारिक नकारात्मक संरचना में गिरावट ला सकती है। रोकथाम सेवाएँ वर्तमान पारिवारिक तनाव को बढ़ाए बिना या पारिवारिक कामकाज में बाधा डाले बिना सहायता प्रदान करने में प्रभावी हैं। इस उद्देश्य के साथ पारिवारिक चिकित्सा, दुर्व्यवहार करने वाले माता–पिता के लिए पुनर्वास की ओर निर्देशित है। मानवीय संबंधों में लगाव महत्वपूर्ण है क्योंकि वे पारिवारिक इकाइयों का निर्माण और संचालन मजबूती से करते हैं।

References

1. https://semcbseschool.com/the-importance-of-parental-involvement-in-education-building-a-partnership-for-success/
2. Josephine Oranga, Audrey Matere, Eliud Nyakundi , Importance and Types of Parental Involvement in Education"written,published by Open Access Library Journal, Vol.10 No.8, 2023
3. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/474129
4. https://files.eric.ed.gov/fulltext/EJ1156936.pdf
5. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/498991
6. https://srcd.onlinelibrary.wiley.com/doi/10.1111/j.1467-8624.2010.01447.x
7. https://www.sciencedirect.com/science/article/abs/pii/S0738059322001705
8. http://hdl.handle.net/10500/22616
9. https://en.wikipedia.org/wiki/Extended_family
10. https://www.mytutor.co.uk/answers/59994/GCSE/Sociology/Describe-what-sociologists-mean-by-a-matriarchal-family/